रूस के और खिलाफ माहौल

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत का बयान जारी होने से पहले अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर से बातचीत की। एक सप्ताह के अंदर उन दोनों के बीच यह दूसरी बातचीत थी।

अमन सिंह।।

यूक्रेन के बूचा शहर से आई खबरें, तस्वीरें और विडियो फुटेज दिल दहला देने वाले हैं। आश्चर्य नहीं कि इनके सामने आने के बाद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर माहौल रूस के और खिलाफ हो गया है। इस संबंध में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक में भारत ने न केवल इन घटनाओं की भर्त्सना की बल्कि इनकी स्वतंत्र रूप से जांच कराए जाने की भी मांग की। भारत ने हालांकि अपने बयान में इस बार भी रूस का नाम नहीं लिया, लेकिन माना जा रहा है कि यह यूक्रेन युद्ध शुरू होने के बाद से भारत का अब तक का सबसे कड़ा बयान है। वैसे, रूस ने इन तस्वीरों और विडियो फुटेज को फर्जी बताया है। उसने कहा है कि रूसी फौज ने बूचा में आम लोगों की हत्या नहीं की है। इस बीच बदले अंतरराष्ट्रीय माहौल में अमेरिका की ओर से भारत पर रूस के खिलाफ स्पष्ट स्टैंड लेने का दबाव बढ़ना भी तय है। कई रूपों में इसकी शुरुआत भी हो गई है। वाइट हाउस प्रवक्ता ने नियमित प्रेस ब्रीफिंग में खास तौर पर भारत के संदर्भ में यह बात दोहराई कि उसके मुताबिक रूस से ऊर्जा और अन्य वस्तुओं का आयात बढ़ाना भारत के हक में नहीं है।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत का बयान जारी होने से पहले अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर से बातचीत की। एक सप्ताह के अंदर उन दोनों के बीच यह दूसरी बातचीत थी। ध्यान रहे, वॉशिंगटन में दोनों के बीच टू प्लस टू मीटिंग भी हुई। उधर न केवल पेंटागन ने भारत के रूस से एस 400 एयर डिफेंस मिसाइल सिस्टम खरीदने पर दोबारा टिप्पणी की है बल्कि अमेरिकी सांसदों ने रूस और भारत के बीच होने वाले डायमंड ट्रेड को भी निशाना बनाया है। हालिया रिपोर्ट के हवाले से इन सांसदों ने इस तथ्य की ओर ध्यान खींचा है कि दुनिया के 95 फीसदी हीरों की कटाई और पॉलिशिंग का काम भारत में होता है। ऐसे में रूसी कंपनियों द्वारा निकाले गए हीरों की भारत में कटाई और पॉलिशिंग किए जाने के बाद अगर वे अमेरिकी बाजार में बेचे जाते हैं तो बिना बाधा के रूसी कंपनी मुनाफा कमा लेती है। इन सांसदों ने बाइडन प्रशासन से इस कानूनी लूपहोल को दूर करने की अपील की है। ध्यान रहे, कटाई और पॉलिशिंग के बाद हीरों का निर्यात भारत के राजस्व का एक बड़ा स्रोत है। यह सालाना करीब 20 अरब डॉलर का कारोबार है।

जाहिर है, अमेरिकी सांसदों की पहल आगे बढ़ी तो भारत को नुकसान होना तय है। बहरहाल, जहां तक रूस का सवाल है तो मानवाधिकार और शांति जैसे मसलों पर भारत का शुरू से स्पष्ट रुख रहा है जो कि संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक में दिए उसके कड़े बयान में भी जाहिर होता है। उस रुख से समझौता करने का कोई सवाल ही नहीं उठता। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं समझा जाना चाहिए कि भारत किसी के दबाव में अपनी स्वतंत्र विदेश नीति को और अपने राष्ट्रीय हितों को अनदेखा करते हुए कोई कदम उठाएगा।

धर्मो का जन्म

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। समय की मांग परिस्थिति के अनुसार सृष्टि की रक्षा के लिए एक नए धर्मों का जन्म हुआ। लेकिन धर्म परिवर्तन के सवाल पर उन्होंने कहा, हिन्दू धर्म एक धर्म ही नहीं बल्कि जीने की कला भी है। इसलिए कोई भी इस धर्म को अपनी इच्छा से स्वीकार कर सकता है। लेकिन जोर जबर्दस्ती और प्रलोभन द्वारा धर्म परिवर्तन करवाना उचित नहीं है। द्वारका शारदा पीठ के शंकराचार्य स्वरूपानंद सरस्वती ने धर्म परिवर्तन करके हिंदू बनाए जाने पर कोई टिप्पणी नहीं कि लेकिन उन्होंने भी कहा कि लालच या प्रलोभन देकर किसी को भी हिंदू बनाया जाना गलत है। हिंदू धर्म स्वीकार करने वालों की जाति क्या होगी? जो लोग अन्य धर्म से हिन्दू धर्म में लौटकर आते है उनकी जाति क्या होगी?

संपादकीय

एसपी का विकल्प

आम मुसलमान ओवैसी को नेता तो मानते हैं। यह भी कहते हैं कि वे मुसलमानों की लड़ाई ईमानदारी से लड़ते हैं, लेकिन वोट देने के सवाल पर वे उनसे दूरी बना लेते हैं। यह आम सोच है कि ओवैसी मुसलमानों के वोट पा सकते हैं, लेकिन अपने दम पर चुनाव नहीं जीत सकते। उल्टे बीजेपी को चुनाव जिताने में मदद कर सकते हैं। इसलिए मुस्लिम मतदाताओं के पास अभी एसपी का कोई विकल्प नहीं है। लेकिन किसी भी पार्टी के लिए अपने नेताओं और मतदाताओं की नाराजगी अच्छा संकेत नहीं होती। इसी वजह से पूछा जा रहा है कि 2024 लोकसभा चुनाव में मुसलमान मतदाता किसके साथ जाएगा? कुछ लोग मुस्लिम मतदाताओं के बड़ी संख्या में बीजेपी के साथ जाने की बात करते हैं। इन लोगों को शायद मुस्लिम मानस का पता नहीं है। यही नहीं, कांग्रेस और बीएसपी दोनों से इन वोटरों ने दूरी बनाई ही है। उनकी एसपी के मुस्लिम नेताओं की बयानबाजी पर सतर्क निगाह है। कांग्रेस मुस्लिम मतदाताओं की स्वाभाविक पसंद है, लेकिन यूपी में कांग्रेस को उनका समर्थन तभी मिलेगा, जब पार्टी के साथ दूसरे वर्ग के मतदाता भी जुड़ें। बीएसपी के साथ मुसलमान जुड़ने को तैयार नहीं हैं। विधानसभा चुनाव में हुई पराजय के बाद बीएसपी चीफ मायावती ने इसके लिए मुसलमानों के सिर दोष मढ़ा था। सच तो यह है कि मुसलमान आज बीएसपी और बीजेपी में ज्यादा अंतर नहीं देखते। तो क्या मुस्लिम मतदाता ओवैसी के साथ भी जा सकता है? 2024 अभी दूर है। फिर भी राजनीतिक दल इस सोच से आगे नहीं बढ़ सकते कि समय के साथ सब ठीक हो जाएगा। अपने ही मुस्लिम नेताओं और अवाम के बीच से उठने वाली आवाजें एसपी के लिए कठिन चुनौती हैं। उसे समय रहते इसका हल निकालना होगा।

यही नहीं यह प्रश्न मुसलमानों के बीच से पूछा जा रहा है कि क्या अखिलेश उनसे दूरी बनाकर चल रहे हैं या वह हिंदू मतदाताओं के लिए मुसलमानों से दूरी का दिखावा कर रहे हैं?

अखिलेश से नाराजगी

बृजेश शुक्ल।।

उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के बाद क्या राज्य की मुस्लिम राजनीति करवट बदल रही है? क्या समाजवादी पार्टी (एसपी) को एकतरफा मतदान करने वाले मुसलमान किसी नए विकल्प के बारे में सोचने लगे हैं? यह सवाल उठने लगा है कि बीजेपी को चुनाव में एसपी नहीं हरा सकती। फिर मुस्लिमों के लिए अखिलेश यादव की पार्टी का कोई विकल्प है? यही नहीं यह प्रश्न मुसलमानों के बीच से पूछा जा रहा है कि क्या अखिलेश उनसे दूरी बनाकर चल रहे हैं या वह हिंदू मतदाताओं के लिए मुसलमानों से दूरी का दिखावा कर रहे हैं?

यूपी में मुसलमानों के दिग्गज नेता और समाजवादी पार्टी के संस्थापक सदस्य मोहम्मद आजम खान के समर्थकों ने जो मुद्दे उठाए हैं, वे भी पार्टी को परेशान कर रहे हैं। उनके समर्थकों की सपा के प्रति नाराजगी का इजहार आजम के इशारे के बिना संभव नहीं है। आजम ही नहीं बल्कि संभल के सांसद शफीक–उर–रहमान बर्क सहित कई मुस्लिम नेताओं की तरफ से इसी तरह की आवाजें उठ रही हैं। तो क्या यूपी की राजनीति 2024 लोकसभा चुनाव में नई करवट ले सकती है? कहते हैं कि राजनीति में हफ्ते भर का समय भी लंबा होता है, लेकिन फिर भी यह समझना जरूरी है कि आज के संकेत भविष्य को लेकर क्या संदेश दे रहे हैं।

विधानसभा चुनाव से कुछ समय पहले एक वर्ग मान चुका था कि अखिलेश सरकार बनाने जा रहे हैं। उन्हें लग रहा था कि मुस्लिम मतदाता अखिलेश के साथ हैं। मुसलमानों ने बहुजन समाज पार्टी (बीएसपी), कांग्रेस और ऑल इंडिया मजलिसे इत्तेहादुल मुस्लिमीन के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी को पूरी तरह दरकिनार कर दिया है। नतीजों से भी यह बात साबित हुई। मुस्लिम बहुल क्षेत्रों में मतदान का प्रतिशत भी अन्य क्षेत्रों के मुकाबले कहीं ज्यादा रहा। फिर भी एसपी सरकार बनाने से बहुत पीछे रह गई और बीजेपी की वापसी हुई। इसी वजह से एसपी के मुस्लिम नेताओं और मुस्लिम वोटरों के बीच हलचल शुरू हुई है। लखनऊ के मुस्लिम बहुल क्षेत्र के मोहम्मद ताहिर कहते हैं कि मुसलमानों ने ईमानदारी से एसपी को वोट दिया। लेकिन पार्टी जिसे अपना मजबूत वोट बैंक मानती थी, उनसे उसे अपेक्षित समर्थन नहीं मिला। चुनाव से पहले मुसलमानों के बीच से यह सवाल भी पूछा जा रहा था कि समुदाय एकजुट होकर एसपी को वोट देता है, लेकिन सत्ता में उसे उतनी हिस्सेदारी नहीं मिलती।

वहीं, विधायक चुने जाने के बाद अखिलेश और रामपुर के सांसद मोहम्मद आजम खान ने लोकसभा की सदस्यता से इस्तीफा दे दिया। दोनों ने विधायक पद अपने पास रखा। दोनों के पास इसकी अपनी–अपनी वजहें थीं। एसपी में मुलायम सिंह के बाद सबसे वरिष्ठ नेता आजम खान हैं। लेकिन वह पिछले दो साल से जेल में बंद हैं। एसपी चीफ अखिलेश इस बीच आजम से मिलने सिर्फ एक बार जेल गए। आजम और उनके समर्थक पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से नाराज हैं। उन्हें लग रहा है कि संकट की घड़ी में पार्टी नेतृत्व उनके साथ उस तरह से खड़ा नहीं हुआ, जैसे उसे होना चाहिए था। इन लोगों को लगता है कि आजम को नेता विपक्ष का पद मिलना चाहिए था। लेकिन विधानसभा में अखिलेश ने अपने भाषण में आजम का नाम ही नहीं लिया तो नेता विपक्ष की बात तो रहने ही दीजिए। आजम के साथ पार्टी के दूसरे कई मुस्लिम नेता भी नाराज हैं। बरेली से एसपी विधायक शहजुल इस्लाम के पेट्रोल पंप पर योगी आदित्यनाथ का बुलडोजर चल गया।

सूडोकु नवताल-5406

सरल

6					7			
		8	2				7	5
	4			3				6
	7	1			2		5	
8				4				3
	2		8			9	6	
2				8			3	
4	3				9	8		
			3					9

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5405 का हल

7	4	6	9	1	5	8	3	2
1	5	2	8	3	7	4	6	9
9	3	8	2	6	4	7	1	5
8	6	4	7	9	1	5	2	3
5	2	7	3	4	6	9	8	1
3	9	1	5	8	2	6	7	4
2	7	9	1	5	8	3	4	6
6	1	5	4	7	3	2	9	8
4	8	3	6	2	9	1	5	7

अपना ब्लॉग

समुदाय की नाराजगी और बढ़ी है?

मोहन। कैराना के विधायक नाहिद हसन के खिलाफ कड़ी कार्रवाई हो रही है और उनकी चावल मिल पर ताला जड़ दिया गया। एसपी के एक मुस्लिम नेता कहते हैं कि इन मामलों पर अखिलेश ने चुप्पी साध ली। क्या इससे एसपी को लेकर समुदाय की नाराजगी और बढ़ी है? संकेत तो ऐसे ही मिल रहे हैं। विधानसभा चुनाव में मुरादाबाद मंडल में कुल 27 में से एसपी को 17 विधानसभा सीटों पर जीत मिली थी। लेकिन हाल में हुए विधानपरिषद चुनाव में रामपुर बरेली सीट पर एसपी प्रत्याशी मशकूर अहमद को सिर्फ 400 वोट मिले। वैसे, इस सीट पर कुल 4880 जनप्रतिनिधियों के वोट थे। इनमे 1800 मुस्लिम थे। यह परिणाम भले ही दूरगामी राजनीति का संदेश न देता हो, लेकिन इससे मुस्लिमों में एसपी से नाराजगी का तात्कालिक संकेत तो मिल ही रहा है। यहीं से यह सवाल खड़ा हुआ है कि मुस्लिम वोटरों के पास एसपी का क्या विकल्प है?